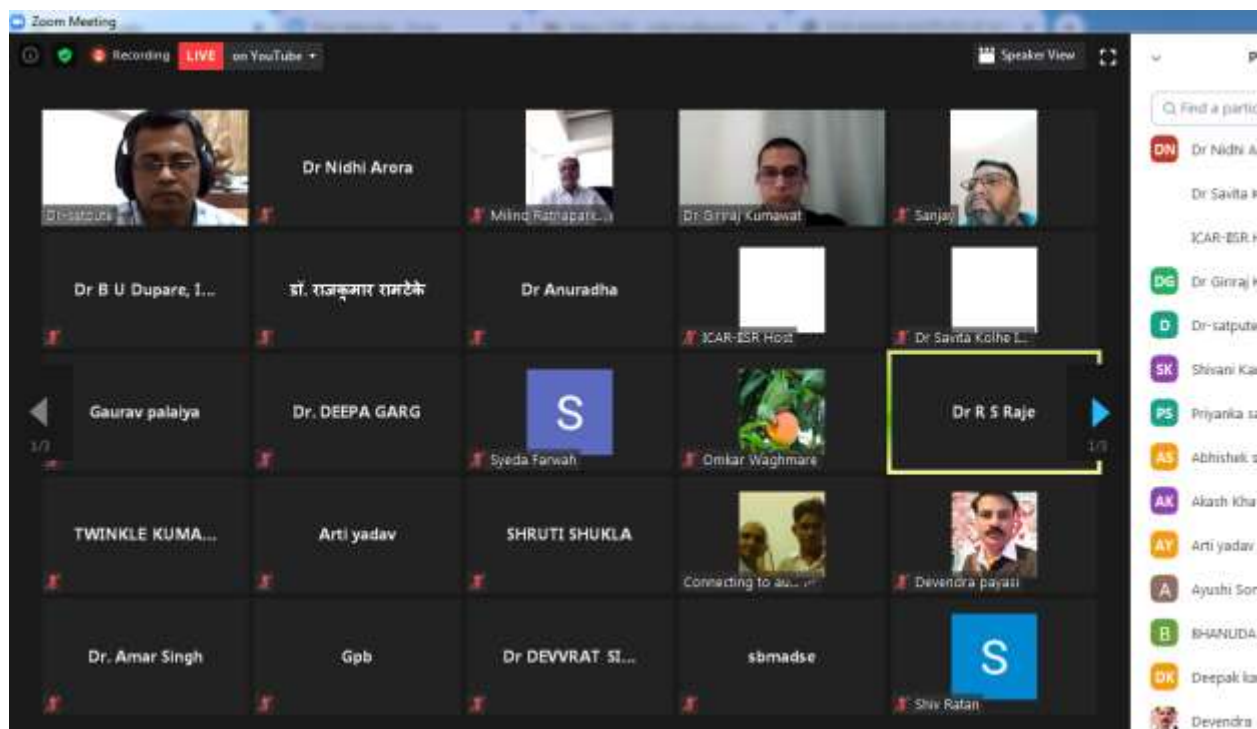
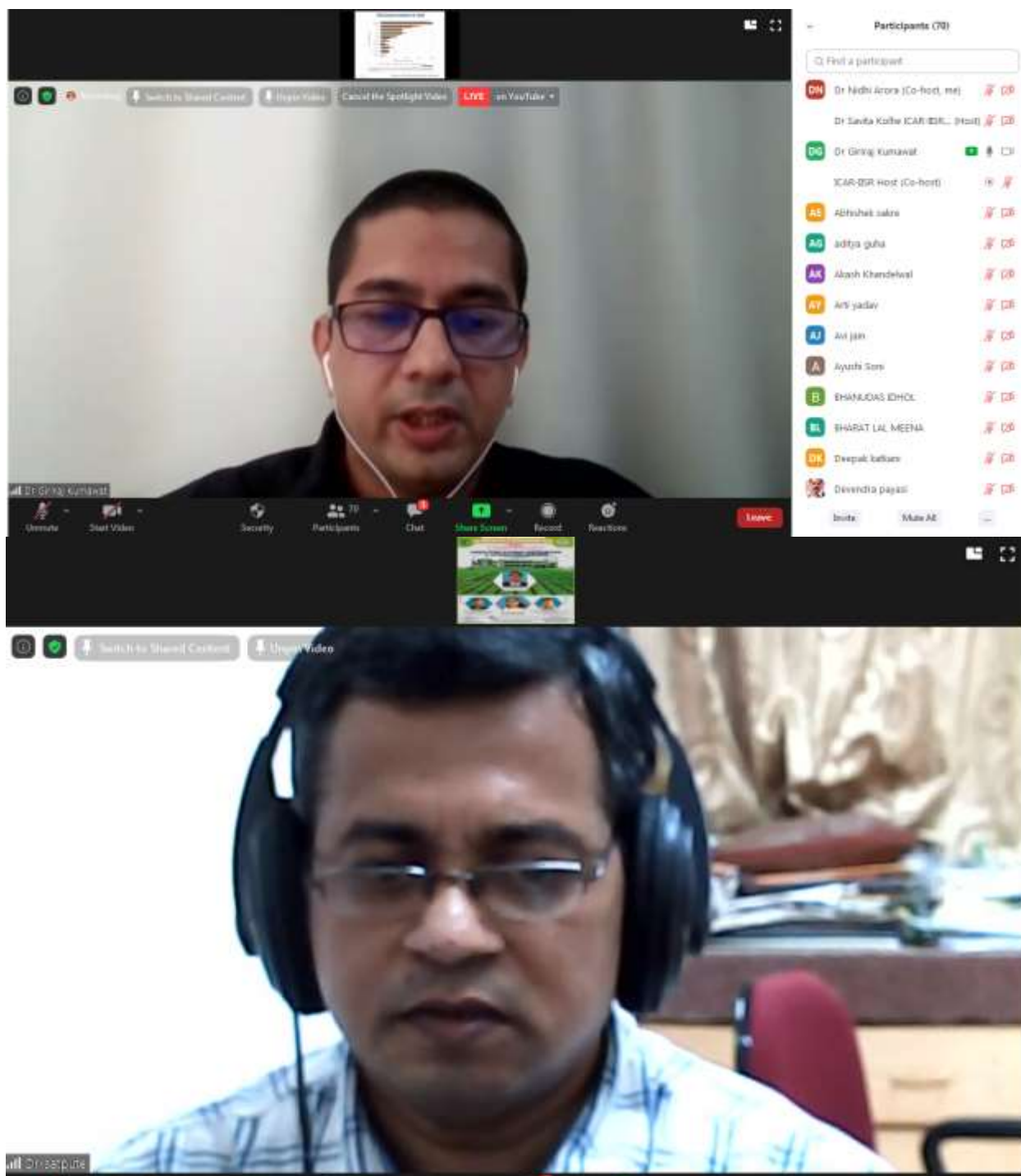


भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा “सोयाबीन की उच्च उत्पादन क्षमता वाली किस्मों के विकास में जीनोमिक्स असिस्टेड ब्रीडिंग पद्धति की उपयोगिता ” पर वेबिनार का दिनांक 31 मई 2020 को आयोजन की प्रेस नोट

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा आयोजित किये जा रहे वेबिनारों की श्रृंखला में; संस्थान ने 31 मई 2021 को “ सोयाबीन की उच्च उत्पादन क्षमता वाली किस्मों के विकास में जीनोमिक्स असिस्टेड ब्रीडिंग पद्धति की उपयोगिता ” पर एक वेबिनार का आयोजन किया, जिसमें महाराष्ट्र, नई दिल्ली, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, झारखंड, कर्नाटक जैसे राज्यों में स्थित भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के अन्य संस्थानों के वैज्ञानिक, अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसन्धान परियोजना के सोयाबीन प्रजनकों के साथ-साथ देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर एवं जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के शोधकर्ताओं, प्रोफेसर एवं वैज्ञानिकों समेत कुल 82 शोधकर्ताओं ने भाग लिया।



इस वेबिनार में प्रमुख वक्ता भा.कृ.अनु.प.- भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के डॉ. गिरिराज कुमावत, वैज्ञानिक, कृषि-जैव प्रौद्योगिकी, ने सोयाबीन फसल में जीनोमिक्स असिस्टेड आणविक ब्रीडिंग पर अपने अनुभवों को साँझा की। साथ ही उन्होंने यहाँ कहाँ की अंतर्राष्ट्रीय पटल पर विकसित नवीनतम प्रजनन तकनीक “जीनोमिक्स-असिस्टेड ब्रीडिंग” के उपयोग से अब कम समय में ही अधिक उत्पादन क्षमता वाली सोयाबीन की किस्मों के विकास कर सोयाबीन की उत्पादकता में वृद्धि हासिल की जा सकती है। इस बाबत भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान इंदौर में उनके द्वारा जीनोमिक्स असिस्टेड ब्रीडिंग में जीनोमिक पद्धति से किस प्रकार से जीनोम-वाइड एसोसिएशन, हैप्लोटाइप आधारित प्रजनन, जीनोमिक चयन, जीनोम संपादन इत्यादि का उपयोग सोयाबीन की उत्पादकता वृद्धि हेतु किया जा सकता है।



डॉ. ज्ञानेश कुमार सतपुते, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, भा.कृ.अनु.प.- भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, एवं इस वेबिनार के समन्वयक ने इस अवसर पर सोयाबीन उत्पादकता बढ़ाने के लिए विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हुए इस क्षेत्र में जीनोमिक्स असिस्टेड ब्रीडिंग के अनुप्रयोग पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि जीनोमिक्स असिस्टेड ब्रीडिंग के साथ स्पीड ब्रीडिंग का उपयोग करके कम समय में अधिक उपज देने वाली सोयाबीन की किस्मों का विकास किया जा सकता है। सत्र के अंत में विभागाध्यक्ष (फसल सुधार) डॉ. संजय गुप्ता ने विश्वास व्यक्त किया कि इस वेबिनार के माध्यम से प्राप्त जानकारी का भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के देश भर में फैले पौध प्रजनकों द्वारा

अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास में उपयोगी होगा। तत्पश्चात वेबिनर में प्रश्न-उत्तर सत्र एवं वैज्ञानिक संवाद भी आयोजित किया गया तथा अंत में वेबिनार आयोजन के समन्वयक डॉ.ज्ञानेश कुमार सातपुते द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ वेबिनार का समापन हुआ।